The ARTist International: A Multidisciplinary Journal Dedicated to All Artist
Vol. 3, Issue 1 – 2019
ISSN: 2581-5393

दरभंगा राज में संगीत विधा

डॉ0 कृष्ण कुमार सिन्हा[1]

[1]विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग, कर्पूरी ठाकुर कॉलेज, मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण (बिहार)

सारांश

यहाँ की संस्कृति में मुसलमान के सभ्यता निवास करने लगे जिससे संगीत सभ्यता में बदलाव आने लगा था परंतु उनके आधारशिला मिथिला संस्कृति के आधार पर थें। कहा जाता है कि जब मुसलमान मूर्ति पूजा का विरोध करने लगे थें उस समय मोहम्मद गोरी कुतुबुद्दीन को अपना प्रतिनिधि बनाये थें जो कुतुबुद्दीन दरभंगा के राज से सम्बंधित रहे। उसी समय मुसलमान को दरभंगा राज के संगीत कलाकार कला से आकृष्ट किये। उसके पश्चात् अलाउद्दीन खिलजी बादशाह बने तो उनके दरबार में यहाँ के संगीत और संगीतज्ञ विशिष्ट स्थान पाये।

कूट-शब्दः मिथि, पुराण, द्वारबंगा, सम्प्रदाय, चारी, मिथिलाक, पल्लवित, लोकनि।

दरभंगा राज में संगीत

दरभंगा राज की स्थापना एवं उसकी ऐतिहासिक परम्परा का उद्गम प्राचीन काल से समझा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। प्राचीन काल में राजा मिथि के नाम पर जो मिथिला राज था जिसकी राजधानी दरभंगा थी वहीं कालांतर में चलकर दरभंगा राज के नाम से प्रसिद्ध हुआ। दरभंगा राज को मिथिला का हीं दूसरा नाम दिया जा सकता है। मिथिला शब्द का सम्बंध राजा मिथि से है, अर्थात् मिथि राजा के नाम पर हीं मिथिला राज का नामाकरण माना जा सकता है। इस संदर्भ में कई वेद-पुराण, ग्रन्थ इसकी पुष्टि करते हैं। बाल्मिकीय रामायण और मार्कण्डेय पुराण, विष्णु-पुराण आदि में मिथिला की चर्चा हुई है।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.

The ARTist International: A Multidisciplinary Journal Dedicated to All Artist
Vol. 3, Issue 1 – 2019
ISSN: 2581-5393

दरभंगा शब्द का भी अर्थ उसके क्षेत्र या किसी नाम से लगाया जा सकता है। दरभंगा शब्द की उत्पत्ति द्वार वंगा से है। वर्तमान राज्य बिहार, बंगाल और उड़ीसा ये संयुक्त थें जो मिथिला के क्षेत्रांश में पड़ते थें जिसका सीमा-क्षेत्र का द्वारा विभाजित रूप में दरभंगा में था। बंगाल का द्वार का आरम्भ इस क्षेत्र से था जिसके कारण द्वारबंगा का नाम दिया गया जो बोल-चाल की भाषा में आप भंरश स्वरूप शब्दों में बदल कर दरभंगा नाम से जाना गया। परंतु मिथिला का नाम हीं दरभंगा से जाना जाये तो कोई असत्यता नहीं होगी। भले हीं मिथिला प्राचीन, वैदिक कालों में अत्यधिक क्षेत्र का स्थान रखा हो।

दरभंगा मैथिल कवि लोचन कृत रागतरंगिनी इसी राज की देन है। दरभंगा राजघराने के मैथिल कवि लोचन संगीत जगत के लिए ऊच्च कोटि के क्रियात्मक संगीत तथा संगीत शास्त्र के विद्वान हुए। इनका समय काल चौदहवीं और पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य काल में था। इनका राग तरंगिणी अधिक प्रसिद्ध हुआ।

इस ग्रन्थ में वर्तमान थाट को मेल कहा गया जिसकी संख्या बारह बतायी। उन्होंने भी मेलों से हीं रागों की उत्पत्ति कही। इस ग्रन्थ में राग-रागिनी पद्धति का अनुसरण किया गया था। इसमें छह राग तथा प्रत्येक राग की पाँच-पाँच रागिनियाँ मानी गयी। छह रागों के नाम इस प्रकार से दिये-

(1) भैरव,
(2) कौशिक,
(3) हिण्डोल,
(4) दीपक,
(5) श्री
(6) मेघ

लोचन के मतानुसार सोलह हजार गोपियों ने अलग-अलग रागों का गायन किया था जो सोलह हजार रागों की संख्या में हुआ। सम्पूर्ण अर्थात् सात स्वरों वाली जाति के राग ब्राह्मण जाति के राग माने गए। शाडव जाति, क्षत्रिय और औडव जाति राग वैश्व के माने गये।

पण्डित कवि लोचन ने अपने ग्रन्थ के अन्त में राग के रसों पर प्रकाश डाला है। उनका मत रहा कि जिस राग में रस की प्राप्ति नहीं हो वह राग कोटि में नहीं आ सकता। इस प्रकार

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.

इस ग्रन्थ में लोचन ने संगीत के प्रमुख तत्त्वों का वर्णन किया। इनके द्वारा भी श्रुति व्यवस्था पर विस्तृत प्रकाश डाला गया।

दरभंगा राज घराने के पण्डित लोचन जो मैथिल ब्राह्मण जिनका समय काल मुजफ्फरपुर में बीता उस समय मुजफ्फरपुर मिथिला दरभंगा का क्षेत्र था। अमीर खुसरो ने जिस संगीत पद्धति की मान्यता दी थी उसे लोचन भी मान्यता दिये थें।

ऐसा विदित है कि अमीर खुसरो के बाद राजा मानसिंह तोमर का समय काल आया अथवा समकालिक दोनों हुए होंगे। संगीत पद्धति अमीर खुसरो ने जो दिया वह ध्रुपद शैली की प्रमुख गायकी रही जिसे लोचन ने मान्यता दी।

दरभंगा राज के संगीत उच्च कोटि के थें जो मुसलमान काल के पूर्व से हीं वर्त्तमान थें। इस दरबार के लोक संगीत क्रमशः शास्त्रीय रूप में देशी संगीत में परिवर्तित होने लगा। बोली, रहन-सहन, पर्व-त्यौहार आदि के आधार पर संगीत की रचना होने लगी। लोक संगीत को सुलभ संगीत के रूप में इस दरबार के संगीत विशेषज्ञ कलाकार राग के स्वरूप शास्त्रीय भाव में दिये। इसलिए भारतीय संगीत के यहाँ के लोक संगीत शास्त्रीय संगीत में देशी संगीत के रूप में परिणत हुए। इस घराने के राजदरबार में राग गायन के नामकरण स्थानीय गीत के आधार पर किया गया जो शास्त्रीय स्वरूप में राग के नाम से जाना गया। इस बात की पुष्टि निम्न राग से है:-

राग जौनपुर-जौनपुर स्थान नाम पर

राग मुलतानी-मुलतानक नाम पर

राग बंगाली-बंगाल नाम पर

राग मांड-मांडक के नाम पर

राग सिन्ध भैरवी-मालवा नामक स्थान पर

राग मालव-मालवा नामक स्थान पर

राग गौड़-गौड़ नामक स्थान पर

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.

राग बरारी-बरार नामक स्थान पर

राग भीम पलासी-पलासी नामक स्थान पर

राग गुर्जरी-गुजरात नाम पर

राग तिरहुत्तिरहुत (मिथिला) के नाम पर

इसी प्रकार तिरहुत गीत जो इस दरबार में गाये वो राग तिरहुत कहलाएँ।

दरभंगा राज के संगीत के प्रति योगदान राग, ग्रन्थ, संगीत शैली, संगीत शास्त्र, संगीत के कलाकार घराने आदि के रूप में काफी सहायक रहें। आज भी वर्त्तमान संगीत संस्कृति की सभ्यता में हिन्दुस्तान के सम्पूर्ण राज्य चाहे वहाँ पं0 विष्णु नारायण मातखंडे जी की पद्धति "उत्तरी भारतीय संगीत (हिन्दुस्तानी)" हो या पं0 विष्णु दिगम्बर पलुश्कर के दक्षिणी संगीत (कर्नाटकी) पद्धति हो क्यो न हो वहाँ दरभंगा के मिथिला की संस्कृति कला संगीत विराजमान है तथा उसकी झलक प्रकाशित हो रहे हैं।

दरभंगा में पूर्ण रूप से वैदिक संगीत का प्रचलन समस्त भारत में रहा। यहाँ के पण्डित, ज्योतिष, दार्शनिक, भीमांसक आदि प्रत्येक स्थान पर अपनी छवि बनाये हैं। दरभंगा के सम्पूर्ण संगीत देशी संगीत माने गए जिनका आधार लोक संगीत रहा।

लोक संगीत एवं लोक लय जिस प्रकार इस दरबार में अविष्कृत हुए उसी प्रकार शास्त्रीय संगीत का विकास देशी संगीत रूप में लोक संगीत के आधार पर किये गये। जिसमें गायन, वादन एवं नृत्य, इन तीनों प्रधान अंग संगीत विधा के वर्त्तमान रहे।

विद्यापति, लोचन, उमापति, रमापति, गोविन्द दास, चन्दा झा, हर्षनाथ झा आदि यहाँ के महान कवि, संगीतज्ञ तथा कलाकार हुए जिन्होंने मिथिला लोक शैली के आधार पर राग रागिनी को देशी राग में परिणत किये जिसका आधार भारतीय संगीत के शास्त्रीय विद्या के देशी संगीत से रहा।

दरभंगा राज में गान-पद्धति प्राचीन भारत के गान पद्धति जैसे हीं विकसित हुए। राग-रागिनी गान के सम्प्रदाय-सोमनाथ मत, हनुमन्मत एवं रागार्णव मत के अनुसार मध्य युग में विकसित होते रहें।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.

हिन्दुस्तान के अलावा दरभंगा के संगीतज्ञ चीन और तिब्बत में भारतीय संगीत का प्रचार-प्रसार किये। मुगलकालीन अबुल फजल के पुस्तक आइने अकबरी में दरभंगा के चारी गीत लिखे गये हैं जो दिल्ली के गलिधरि के रूप में जाने जाते हैं।

कर्नाटक वंश के स्थापना काल में दरभंगा के "लोकनी" काव्य साधना के विद्वान थें तथा एक अच्छे संगीतज्ञ भी रहे। उनका बराबर समय मल्लराज के पास गुजरता था जो अपनी काव्य रचना को राजा के सम्मुख सुनाया करते थें जो काफी सम्मानित हुए। उनकी एक रचना काव्य की रहीं जिसमें वे अपने राज दरबार की स्थिति का वर्णन किये थें।

मिथिलाक संगीत मिथिलाकक माटी-पानी से अंकुरित होइत, नेपाल में पल्लवित एवं पुष्पित भेल।

अर्थात मुसलमान आक्रमण से दरबार से सभी विद्वान गुणी नेपाल में जाने लगें थें उसी सन्दर्भ में लोकनि मिथिला की भाषा में काव्य दिये हैं कि मिथिला से अंकुरित गुण को फल-फूल के रूप में नेपाल को दिया जा रहा है अर्थात् संगीत के आधार रहे जो सम्पूर्ण संगीत विद्या का महत्त्वपूर्ण शास्त्रीय समाज में योगदान से प्रभावित होते रहें।

दरभंगा राज के संगीत विदेषी आक्रमणों से ग्रसित रहने लगे थें जो अपने गुणों की कलाकारी, गायन-वादन तथा नर्त्तन में चमत्कारी रूप में उड़ीसा, तैलंग तथा कर्नाटक के नृत्य में सभी संगीतज्ञ मिथिला शैली के प्रचार-प्रसार को कायम रखे थें। महान नर्त्तक सुमति और जयंत दरभंगा राज में बाहर से आये थें जो स्वयं मिथिला के लोक शैली संगीत को अपना कर एक नर्त्तक घराना स्थापित कियें आज भी मिथिला की लोक नृत्य प्रथा अपने आप में एक पृथक नृत्य का रूप ली है।

मल्लिक, नाहर, पाठक, मिश्र ये सभी पश्चिम देश के वासी थें। इनका वास स्थान दरभंगा राज में किसी न किसी कारणवश हुआ तथा इनमें सभी संगीत की विद्या से सम्बंध रखते थें और मिथिला संगीत सभ्यता से सम्बंध कायम करने लगे जिसका परिणाम यह हुआ कि यहाँ का देशी संगीत सभ्यता एवं वंशज का रूप ले लिया जिनके वंशज घरानों में परिणत हुए जिन्हें विभिन्न राजकाल में दरभंगा के आस-पास बसाये गये। आज संगीत की सभ्यता में ध्रुपद शैली भारत में प्रसिद्ध रहा जिसमें दरभंगा की ध्रुपद इन्हीं वंशज घरानों द्वारा कायम रहा जो संगीत विद्या के क्षेत्र में योगदान रूप में प्रभावित हुए।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.

दरभंगा के ग्राम-अमता उसके सर्वप्रमुख उदाहरण है जहाँ के मल्लिक घराना परवावज वादन तथा ध्रुपद गायन में ख्याति पाये। और भी घराने वंशज वादन के विभिन्न शैली बाज में अपना ख्याति प्राप्त किये और संगीत के क्षेत्र में हिन्दुस्तान हीं नहीं विदेशों में भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किये।

महाकवि विद्यापति जो इस राज के उत्तम साहित्य विद्या के विद्वान थें जिन्होंने जयदेव के गीत गोविन्द का आधार मानकर अपने मिथिला लोक संगीत का गायन काव्य रूप में दिया जो संगीत क्षेत्र हेतु काफी महत्त्वपूर्ण रहे। यहीं नहीं विद्यापति ने गीत गोविन्द के मिथिला लोक शैली पर नेटुआ की रचना की जिनमें विद्यापति जयदेव के गीत गोविन्द के शैली तथा ताल आधार माने। गीत गोविन्द के सभी पद जो गायन वादन तथा नृत्य अर्थात् संगीत के सभी अंग में जयदेव द्वारा अभिव्यक्त थें उन्हें विद्यापति ने अपने मैथिल भाषा में टीकाकरण कर कीर्तनरूप में, नाटक में, गायन में, भावनृत्य आदि में एक अलग संगीत रूपी काव्य साहित्य कायम किया। आज भी विद्यापति संगीत, संगीत के प्रमुख अंगों की शैली हुई जिस प्रकार रविन्द्रनाथ टैगोर की शैली रविन्द्र संगीत के नाम से उसी प्रकार विद्यापति संगीत प्रसिद्ध हुआ। आज भी संगीत के मंच आकाशवाणी, दूरदर्शन, संगीत स्कूल कॉलेज आदि में ये सराहनीय गरिमापूर्ण योगदान दे रहे हैं।

उपसंहार

दरभंगा राज में ध्रुपद गायन मिथिला संगीत का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र रहा। यहाँ का गायन एक विशेष रूप में अपना परम्परा स्थापित किया। प्राचीन एवं आधुनिक संगीत के आधार पर दरभंगा राज के सम्पूर्ण मिथिला क्षेत्र में ''पनिचोभ'', ''अमता'', ''मधुबनी'' और ''पंचगछिया'' मुख्य रूप से संगीत के एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहें। यहाँ संगीत विद्यालय एवं संगीत घराना के रूप में संगीत विस्तृत रूप से उपस्थित हुआ। नर्तक-नटुआ घराना भी स्थान लिया।

संदर्भ सूची

1. मिथिला का इतिहास-डॉ0 रामप्रकाश शर्मा, पृष्ठ-7.
2. पॉलिटीकल हिस्ट्री ऑफ एन्सिएंट इण्डिया 5 पृष्ठ-44.
3. हिस्ट्री ऑफ मिथिला-डॉ0 उपेन्द्र ठाकुर, पृष्ठ-3.

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.

ISSN: 2581-5393

4. भारत का इतिहास-डॉ0 रोमिला थापर, पृष्ठ-19.
5. बाल्मीकीय रामायण-बालकाण्ड अध्याय।
6. पुरातत्त्व विभाग, अनुसंधान, भारत सरकार।
7. बुद्धसाल जातक-भाग 4, पृष्ठ-49.
8. आर्यावर्त्त, पटना रविवार 25 अगस्त 1968 ई0 पृष्ठ-9 व 11.
9. संगीत शास्त्र प्रवीण-पं0 जगदीश ना0 पाठक, पृष्ठ-75.
10. मिथिलाक परम्परा-डॉ0 चण्डेश्वर झा, पृष्ठ-61.
11. एजेन (भूमिका) पृष्ठ-1.

Published on: 19th-June-2019

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.